समकालीन भाषा चिंतन में साहित्य, संस्कृति और तंत्रज्ञान की भूमिका

विष्णु जोगराना

सहायक प्रोफेसर, शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, घोघा, जिला भावनगर, गुजरात।

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17263388

ABSTRACT:

भाषा किसी भी समाज की आत्मा होती है। यह न केवल संचार का साधन है, बल्कि साहित्य और संस्कृति की संवाहक भी है। बदलते समय में तंत्रज्ञान (Technology) ने भाषा के स्वरूप और चिंतन को गहराई से प्रभावित किया है। आज साहित्यिक रचनाएँ डिजिटल मंचों पर जन्म ले रही हैं, सांस्कृतिक संवाद वर्चुअल माध्यमों से हो रहे हैं और भाषा की अभिव्यक्ति नएनए रूपों में सामने आ रही है। इस प्रकार, समकालीन भाषा चिंतन में साहित्य, संस्कृति और तंत्रज्ञान की भूमिका को समझना अत्यंत आवश्यक है। मानव सभ्यता का विकास साहित्य, संस्कृति और तंत्रज्ञान की परस्पर क्रियाओं से संभव हुआ है। जहाँ साहित्य मानवीय भावनाओं और अनुभवों की अभिव्यक्ति है, वहीं संस्कृति जीवनमूल्यों और परंपराओं का दर्पण है। तंत्रज्ञान ने इन दोनों को आधुनिक युग में एक नए आयाम से जोड़ा है। विशेषकर भाषा चिंतन के क्षेत्र में तकनीकी उपकरणों ने अभिव्यक्ति और संप्रेषण के ढंग को बदला है। जबकि बदलते परिवेश में यह आवश्यक भी है।

KEYWORDS:

समकालीन भाषा चिंतन, तंत्रज्ञान, साहित्य, संस्कृति, डिजिटल साहित्य.

साहित्य और संस्कृति का अंतर्संबंध:

साहित्य समाज और संस्कृति की जीवंत अभिव्यक्ति है। हर कालखंड में साहित्यकारों ने सांस्कृतिक मूल्यों, लोकजीवन और परंपराओं को अपनी भाषा के माध्यम से दर्ज किया है। संस्कृति ने भाषा और साहित्य की संवेदना को गढ़ा, वहीं साहित्य ने संस्कृति को आत्मसात और संरक्षित किया है। भाषा संस्कृति की जीवंत अभिव्यक्ति है। लोकगीत,

कथाएँ, नाटक, महाकाव्य आदि में सांस्कृतिक परंपराएँ भाषा के माध्यम से संरक्षित होती हैं। वैश्वीकरण के प्रभाव से सांस्कृतिक विविधता पर संकट आया है, लेकिन साथ ही यह भाषा को नए अनुभवों से भी समृद्ध कर रहा है। आज की पीढ़ी सोशल मीडिया, फिल्म, वेब सीरीज़ और डिजिटल आर्ट के माध्यम से नई सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ गढ़ रही है। इस संदर्भ में भाषा ही वह माध्यम है जो संस्कृति को वर्तमान और भविष्य से जोड़ती है।

साहित्य और संस्कृति का आधुनिक भाषा चिंतन:

तकनीकी युग में भाषा का प्रयोग अधिक संक्षिप्त, प्रतीकात्मक और बहुमाध्यमीय हुआ है। इमोजी, मीम्स और इंटरनेट स्लैंग भाषा की नई प्रवृत्तियाँ हैं। "डिजिटल साहित्य" और "ईसंस्कृति" भाषा चिंतन को नया आयाम दे रहे हैं। भाषाविज्ञान अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग के साथ जुड़कर भाषा को समझने और विकसित करने की दिशा में कार्यरत है। आधुनिक भाषा चिंतन में अब वैश्विक संपर्क, सांस्कृतिक विविधता और तकनीकी प्रगति तीनों की भूमिका समान रूप से महत्त्वपूर्ण है।

साहित्य और संस्कृति का लक्ष्य भाषा का सौंदर्यबोध और संवेदनशीलता प्रकट करना है। परंपरागत साहित्य में भाषा की शुद्धता, अलंकार और रस की प्रधानता थी, जबकि समकालीन साहित्य में बहुस्तरीयता, प्रयोगशीलता और सहजता पर बल दिया जाने लगा है। आज का लेखक भाषा के प्रयोग में संक्षिप्तता, सटीकता और गति चाहता है। आधुनिक पाठक भी तकनीकी युग की तीव्रता से प्रभावित है, इसलिए साहित्य की भाषा बदलते सामाजिक और तकनीकी परिवेश के अनुरूप हो रही है। भाषा संस्कृति की जीवंत अभिव्यक्ति है। लोकगीत, कथाएँ, नाटक, महाकाव्य आदि में सांस्कृतिक परंपराएँ भाषा के माध्यम से संरक्षित होती हैं। वैश्वीकरण के प्रभाव से सांस्कृतिक विविधता पर संकट आया है, लेकिन साथ ही यह भाषा को नए अनुभवों से भी समृद्ध कर रहा है।

तंत्रज्ञान और आधुनिक भाषा चिंतन:

तंत्रज्ञान ने भाषा को सबसे अधिक प्रभावित किया है। इंटरनेट

और मोबाइल ने संवाद को तीव्र और व्यापक बनाया। सोशल मीडिया पर नई तरह की संक्षिप्त भाषा, इमोजी और हाइब्रिड शब्दों का प्रचलन हुआ। डिजिटल साहित्य (ईबुक, ब्लॉग, ऑनलाइन पत्रिकाएँ) ने लेखन और पठन को सुलभ बनाया। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और मशीन अनुवाद ने भाषाओं के बीच पुल का कार्य किया है। इस प्रकार, तकनीकी परिवेश ने भाषा को वैश्विक, त्वरित और प्रयोगधर्मी बना दिया है। छापाखाने से लेकर इंटरनेट और कृत्रिम बुद्धिमत्ता तक तंत्रज्ञान ने भाषा और साहित्य पर गहरा असर डाला। डिजिटल माध्यमों ने लेखन और पाठन की आदतों में बदलाव किया है। ईपुस्तकें, ब्लॉग, सोशल मीडिया और डिजिटल पुस्तकालयों ने साहित्य को वैश्विक पहुँच दिलाई है। भाषाई सॉफ्टवेयर और अनुवाद तकनीक ने बहुभाषिक समाज में संवाद को सहज बनाया। इस प्रकार साहित्य और संस्कृति को तंत्रज्ञान ने काफी गहराई से प्रभावित किया है।

चुनौतियाँ और संभावनाएँ:

साहित्य और संस्कृति का विकास जब तंत्रज्ञान (Technology) के माध्यम से हो रहा है और समाज में जब श्रेष्ठता का मापदंड उपस्थित हो रहा है तब कुछ ऐसी भी चुनौतियाँ सामने आएँगी जिसका सामना करते हुए बुलंद इरादों से हमें भविष्य की ओर कदम बढ़ाना होगा। हमें उन चुनौतियों का भी स्वीकार कर आगे बढ़ना होगा जो कुछ इस प्रकार से है भाषा की शुद्धता पर संकट : अंग्रेज़ी और विदेशी शब्दों का अतिक्रमण – हिंदी, गुजराती, मराठी या अन्य भारतीय भाषाओं में अंग्रेज़ी शब्दों का अत्यधिक प्रयोग होने लगा है। जैसे – प्लीज़, ओके, हाय, गुड मॉर्निंग, अपडेट आदि। इससे मातृभाषा की मौलिक अभिव्यक्ति कमजोर होती है। सोशल मीडिया की भाषा – संक्षिप्तता और गति के कारण लोग u (you), gr8 (great), thx (thanks) जैसे रूप इस्तेमाल करते हैं। किंतु इससे भाषा की शुद्ध संरचना और व्याकरण की अनदेखी होती है। उच्चारण और वर्तनी की समस्या – तंत्रज्ञान आधारित कीबोर्ड, ट्रांसलिटरेशन ऐप्स (Google Input, Voice Typing) आदि से गलत वर्तनी और उच्चारण का प्रसार हो रहा है जो आधुनिक साहित्य भाषा के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है। स्थानीय बोलियों का ह्रास – मानकीकृत भाषा और तकनीकी शब्दावली के कारण क्षेत्रीय बोलियाँ धीरेधीरे लुप्त हो रही हैं जो आधुनिक भाषा और संस्कृति के लिए खतरे का निशान है।

इसके अलावा भी कई ऐसे क्षेत्र हैं जिसका सामना आधुनिक भाषा, तंत्रज्ञान से जुड़कर भी कठिनाइयों का सामना कर रही है। जैसे भाषा की मौलिकता पर संकट, जिसमें इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री का सीधा उपयोग करने से रचनात्मकता कम हो रही है। विज्ञापन और बाज़ारवाद का प्रभाव, जिसमें विज्ञापनों और ब्रांडिंग में भाषा का व्यावसायिक और आकर्षक रूप प्रयुक्त होता है, जो मौलिक साहित्यिक भाषा से भिन्न है। सांस्कृतिक ह्रास, जब भाषा में बाहरी शब्द और वाक्य संरचनाएँ हावी हो जाती हैं तो अपनी संस्कृति और परंपरा की मौलिकता चली जाती है। कृत्रिम भाषा निर्माण, चैटबॉट, मशीन ट्रांसलेशन और AI आधारित भाषा प्रयोग से कभीकभी ऐसी अभिव्यक्तियाँ सामने आती हैं जो मानवीय संवेदनाओं से कट जाती हैं।

इस भाषा के विकास में अगर अवरोधकता या चुनौतियाँ है तो तंत्रज्ञान के विकास और आधुनिक उपकरणों के माध्यम से उसका समाधान और संभावनाएँ भी हैं जो हमें एक नई दिशा प्रदान करेगा। जैसे विद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर पर भाषा शिक्षण में शुद्धता पर बल दिया जाना चाहिए। डिजिटल माध्यमों में भी मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। साहित्यकारों और भाषाविदों द्वारा नए शब्द निर्माण या नवशब्द का प्रयास किया जाना चाहिए। मौलिक लेखन और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने के लिए पुरस्कार और मंचों की स्थापना की जानी चाहिए। तकनीकी प्लेटफॉर्म पर मानकीकृत शब्दकोश और वर्तनीजाँच (spellcheck) उपकरणों का प्रयोग किया जाना चाहिए। इसके अलावा भी कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जो भविष्य के समाधान के लिए उपयुक्त है। जैसे बहुभाषिक संवाद और अनुवाद की सरलता, डिजिटल मानविकी के रूप में नई शैक्षणिक और शोध संभावनाएँ, साहित्य और संस्कृति का वैश्विक आदानप्रदान आदि से साहित्य और संस्कृति के विकास में तंत्रज्ञान के माध्यम से महत्वपूर्ण कार्य कर सकते हैं। वर्तमान युग तकनीकी डिजिटलाइजेशन का युग है। मीडिया विश्व की तीसरी महासत्ता के रूप में स्थापित हो चुकी है। सोशल मीडिया समाज पर अपना प्रभुत्व जमा रहा है। ऐसे में साहित्य और संस्कृति को आधुनिक भाषा चिंतन के रूप में तंत्रज्ञान से जुड़कर समाज को अपने नए स्वरूप का परिचय देना होगा।

निष्कर्ष

समकालीन भाषा चिंतन में साहित्य, संस्कृति और तंत्रज्ञान का संबंध अत्यंत गहरा और प्रासंगिक है। जहाँ एक ओर तंत्रज्ञान ने भाषा को गति और वैश्विकता प्रदान की है, वहीं साहित्य और संस्कृति ने भाषा को संवेदनशीलता और गहराई दी है। भविष्य में आवश्यकता इस संतुलन को बनाए रखने की है, ताकि भाषा न केवल तकनीकी दक्षता का माध्यम बने बल्कि साहित्य और संस्कृति की आत्मा को भी जीवित रख सके। साहित्य, संस्कृति और तंत्रज्ञान आज परस्पर पूरक और अविभाज्य हैं। आधुनिक भाषा चिंतन इन्हीं तीनों के संगम से निर्मित हो रहा है। साहित्य संस्कृति को अभिव्यक्त करता है, संस्कृति साहित्य को जीवन देती है और तंत्रज्ञान दोनों को नए आयामों में प्रस्तुत करता है। इस प्रकार भाषा का भविष्य केवल परंपरा और आधुनिकता का नहीं बल्कि तकनीकी और सांस्कृतिक समन्वय का भी होगा।

संदर्भ :

1. नामवर सिंह – साहित्य का भविष्य
2. रामविलास शर्मा – भारतीय संस्कृति और साहित्य
3. गणेश देवी भारतीय साहित्यिक आलोचना में परंपरा और परिवर्तन
4. सोशल मीडिया और इन्टरनेट
5. Marshall McLuhan – Understanding Media: The Extensions of Man

Funding:
This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.